भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा विकसित अनुसंधान निष्कर्षों के विस्तार हेतु नेटवर्क के सशक्तिकरण विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण सह् कार्यशाला

(दि. 09-10 दिसम्बर, 2014)

निदेशक उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान के निर्देश पर उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के अंतर्गत अन्य संस्थानों द्वारा विकसित अनुसंधान निष्कर्षों के विस्तार हेतु नेटवर्क के सशक्तिकरण हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला दिनाँक 09 एवं 10 दिसम्बर, 2014 को वन विज्ञान केंद्र. महाराष्ट्र, जालना में आयोजित की गई। इसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न जिलों के कृषक, गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, स्वःसहायता समूह के सदस्य तथा वन विभाग के कर्मचारी उपस्थित रहे।

उदघाटन कार्यक्रम का शुभारंभ परंपरा अनुसार मुख्य अतिथि, डा. जे. बी. देसाई, निदेशक, वन प्रशिक्षण संस्थान, जालना द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों से आहवान किया कि वे इस कार्यक्रम में प्राप्त जानकारी को मैदान में साकार करने में अपना योगदान दे। डॉ. नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक – जी तथा प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग, उ.व.अ.सं., नें प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों से सभी उपस्थित प्रशिक्षणार्थीयों को परिचित कराया तथा कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शित तकनिकों को अपनाकर अधिक से अधिक जनसमुदायों को परिचित कराने हेतु प्रेरित किया।

डॉ नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक-जी नें सागौन के वृक्षारोपण में कीटों का जैविक नियंत्रण एवं वन रोपणियों में श्वेत इल्ली के समन्वित प्रबंधन के बारे में जानकारियाँ उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को दी। श्रीमति नीलू सिंह, वैज्ञानिक – ई नें लघु वनोंपजों को सुखाने की ड्रम ड्रायर तकनीक तथा कालमेघ, सर्पगंधा, अश्वगंधा आदि औषधीय पौधों की कृषि तकनीक के बारे में जानकारी उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को दी। डॉ. ननीता बेरी वैज्ञानिक –डी नें संस्थान द्वारा विकसित कृषि वानिकी को अपनाकर सीमित भूमि से अधिक लाभ प्राप्त हेतु जानकारी से प्रशिक्षार्थियों को अवगत् कराया। डॉ. ए.के. भौमिक, वैज्ञानिक –सी नें खदानों से निकली मिट्टी, लैटेरिटिक मृदा, भाटा एवं परती भूमि, कंकालित मृदा तथा ताप बिजली गृहो द्वारा उत्सर्जित फ्लाई ऐश के जैविक सुधार पर प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ. आर.के. वर्मा, वैज्ञानिक – एफ द्वारा आँवला रोपणी एंव सागौन के बीजोत्पादन क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कीट और उन पर लगने वाले रोगों के निदान एवं उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी प्रदान की। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने चर्चा में योगदान दिया।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किया तथा अपने फीड़-बैक (Feed back) प्रस्तुत किये।

The contents of this report are provided by PLO, Section of the institute.

The contents of this report are provided by PLO, Section of the institute.